iqua maisuren

\$ 1289 AW मक्ष्यप्रापिकात्रेन्परं स्मिमारिकिक्की सक्त 9 चमित्रक्रियणा त्राण्याम् प्रवासी प्रणाप्राक्तत्रतिमीनात्रम् 2 रुजुपताली प्रमास्य या गाति तम् तिमान्य कार्यात् कार्यात् । वत् । राज्यात् । ने प्राप्ता कि विषय की प्रमान त्राचिष्णि कि किया प्रमा हर ्र स्टीनियमार परित्य या वी भया तामन्त्रमार बैपाइमी सम्मा मणीकाच्याराज्य कार्यान्य विपरिका क्रिक्तिध्य महत्त्वाराज्ये निहम्मारियः । पालनियन मकापिष्णा ।

चाक्रास्त चरंगीताभधारकं क्रा नित्र प्राप्ति प्राप्त प्रतित्त प्रति मामक्रित्। जिस्राज्यता घरे सक्यू त्यापीपांउपतार्भरणेक पृख्यार च्छिगंघमण्यान् डोल्याण नाउरत्य उत्तर प्रतापपा र विष् काराचानियमग्रह्मणानामाम न्यगिवृष्ट प्रेणस् थ्रम् तोतापत्रस्त्यण्ति युधास्यर्विञ शणकारामुग्राजेशावण्या प्रत्य मच्याणि हत्त्रतीं सक्षाणाता चर्मम्णिका क्रिक्टर्णम् . धप्तत्याणिका उद्गार प्रतयि चाश्राधिकारो च्या हमा हिंद्र

(3) 1 92 अमिकाम कर कार्यात्रक न्वामान्य भारत विम्याप्ति विम्याप पात्रमधिष एतसाने मामलाना हम (3A) छ छा छा त्या हो नाम प्राप्त स्थिति न छ विद्यु यो दत्रणा रन्य भन्ता नगुप्रात्माणकाणनिस्ययो (38) श्यमिन्द्रभेता प्रभू पेश्वामीमा क्त्रनाध्ये प्रत्मात्म में युध्ये प्रत्मारिका जा पृष्ठार वेद्रिमामष्राचार (34) म्हाशापाण कार्य पर राष्ट्रके कि हा नित्र कार्यायकारिक विभाषक्या प्रेयमार्थ

चाराभाष्णिक्रक्ष्णप्रस्त्र भ्रम्भूष नगमया प्राम्याना नाम के माना होता नोधातानात्र धिमत्त्रधीत्र वीधार्य (48) मीरेपुक्त प्रस्ताचा हम शालाक्य दिए। स्यारताम्बर्गा नामांतार्यक्षेत्रता त्याण्यात्रध्यम प्रमास्मतो इति (48) घयाने पामा प्राचित्र के के प्रियं हा इत्लाम रक्ष्या विकार मार्गित कार कार चात्युक्त स्लाष्युकारानात्ति 40 'असापारकारकिराकामाध्य तोधात्रस्नुष्य्थयस्य प्रायम् उर्मिमाणः जांस्कित् द्वाराप्त तिरागोत्रयत्याप्रक्षा क्रिन्त्रपा

माज्यारियहाराष्ट्राध्याण्यात्रयाहीय कारमार्मिरहाउति होगाना ने विक हामी नियम्या हाण का नियम क्रित्यकति यमसंति त्याणमनी (SA) द्मकार्यस्य इर् अस्यान्यम्थार इत्पाकाणाणाता संस्थामनम्प निक निर्ण चनद् । इत्पा क क्रिक क्रातिन (58) श्वस्तिकार यहत्र यह सामानिकार छिगोपारु ये श्रीर्या क्रार्थि च्याज त्याण प्रतीर्घाय प्रशीनमधी यहला चळात्रता जामाय जीम राम राष्ट्र छणा सन मारी की ला प्रति पापर पार्वित्यामारम्प्रीय हमरामा रोतिनीवागीत्रपा प्रत्याहर 一种 न्योभन माध्यम्हा

ममकिर भागाण मणाती चे महासंघी र्थित् का हम का मानं चनद् रियम ताली नद्यायकातीयध्यात्रधीय चयाष्ठमधिम से शीयम् तो चना यहा क्ताह्मरी लक्षानिकामनमहा (GA विश्मिक एक भारति विश्वास्त्र के कि युण्णतहर्ष्ठ यम तर्मिक्या रेघरीन न्याण एंचर प्रतिस्थाला ग्रीम्था एट वर्ष म्था गाम्स्रमा 'प्राच्याप्राण प्रतप्रिणया जेत्र्य मिशुपुरमाभयोषिण्या नमिर्मान्यान्याण भारति वर्षे चन्न यात्र शिक्षात्र शिक्ष का शर्य युक्त घर्ना निहमस्याप्र कंमक्रम जनम्द्र प्रस्त हेमत्ये छप्र छेप्रेश्वाना भधमपुणियह ना मिकिएम

नायातेषप्रधियाणभेत्रस्याधाः "जा प्रजंगीमीकागीतम् लाजमार्गि च्याने छं प्रगण्य प्रमे परत्र करणाज्य - ฮมาเมากาน ยุฮรคภากษา WALLENSTH उपची कत्काभ ते गुर्भ च न द्वाय क्रियम् प्रायकम् ग्रायम् विकास भ्रमण मार्थ भाष्यु ए प्रांग को त्या त्या ए - मर्गित्रमान्त्रभाष्ट्रभाग्ना जन्मित्री भेग त्रिम्त्तव्रीम्स्मर्ग चेत्रात्ण धेत्रधानीयामत्त्रोन प्रत्मकारो छ राष्ट्रयभ्य थ छ जानी प्रविश्वधामधी उउंश्यम् भाषानी क्र कार्य स्थारी प्रक्रिक करमा चार्ना घर प्रमेत् युध्धास्थ्रभगव तक्षाणातीयता जा से मीत्यर् जिल्यान स रनामकेंद्री मधमपश्चमेश्रमणम् पाष्ठियेशी मुनाभयी साज्यात्रयोष्ट्री

(8) याग्यश्चित्राजनधारीकारोध्य ने माज्या श्र एए। मर्माय कार्य ही पतो छे पं पुराया याणा छये हा क्रायर क्रमान न्या क्रमान्य में कार्य वृच्याचा ने वर्ष प्रत्यु त्र प्रथा था व कामान में ने मिक शहर है है कि है महिमान कर्म मुल्य वाद्या हुगा की यह से स्टारिश स्मायाण प्राधानमा मधीसंप्रका र्थनार्मा धीरानियानी भाषा नी या मिता छिर्यास्ति ताध मन्पान्यार् यायम् प्राचित्प : क्षारकार्यान्योत्यातायम्प्रेश - मध्यानक्रानीपंत्रावृद्रोक्यान योग क्लेडिन अन्यक्त्रेकार्धा रधार्यक यशिस था। त्थहान्स्य का शन्या य 38

य ता धिकत प्रयस्प्रियोधन धेम अन्सधारम् व्हाव्यान्त्रत्यम् अह सुर्निधित्रधानाधानभात्र त्यंत पार धार्मा छ ते हैं लियात युय यरगाजनस्मा भुगमन्त्रण मधीप पिष्यसुक्त एश्राप्य तर्भाषापुरियो मम्पान्य रिष्टमात्र की न प्रविद्य - मुक्लिके प्रमण्डिम् प्रत्या जत्र मन् उच्छा द्या प्रत्या स्न प्राष्ट्री मान्या व्य प्रमी ए जाने च श्राजपारण का धार्मितात्रियां. -श्रविभग्ति म्यत्। मन्यत्रिकेषी यय प्रध्या करो ताल त्या जनाकरो मामान भी मार्मिन या थेय निकापन्यत्रमात उमगत्भ धमते

नाच्येपीस्त्र प्रत्मक्रिपाप्त घयर इक्लामन्छ छात्यो नतिपा छमे च मार्गिकारका सम्मान्त्र मित्र नत्युन्थाय दल्षात्र पाणात्येश्वं. नंचमधनत्मप्रमेयण राज्य धः।।३।।लक्षरकायानाजिशिश्र एग मलाश्रामा धराष्ट्रायला प्रत नद्यस्थुप्रिश्री द्रमण्णात्रत्रकातो मध्यक्रिक्रिक्ष कार् कार्य पार्श्वास सुहित्म पार्शकाध्ययं ध माराष्ट्रवापूर्वा क्राप्ट्रमाया जायान् सन्धार्थकी र्वावाश्रमम स्थुको चरापा काल्म तामंच छतिति हिता भ शापा कल हम एप पानि होता त क्राजिकाकार वर्षकार ल्लाका का यागला हिमश्च प्रच मर् उत्रनिनया क्य देलया

23 र्शियाधामाजिक्सियामार् च्याच्या सामाच्या प्रस्ति हो सदरकात् चे छेन मनमस्यु में कार णाताण प्राप्त सम्भाग कर जिल्ला र उत्तरणी छर्छा भा य थिल भारत (11A) पती क्ला चूर कलिति या या मा चलका चित्राहात्मे ते कता उ पामलपाणेशाण तेपनाण जममित्य (118) धारल प्रत्म वाष संयक्तित श्रीयवी पुरिक्तानम धानण होताण्याप्रही ता उपन भाषणे द्वातीण्यात्त हररामी का माजे वनमात्रीयम (III) मपुत्रभ धामत्याले जित्रा नियाना हानमाध्येमण्य विजित्ता स्त्रीता होतानिम्द्रामिकारि त्यन्य देल यह महात्मा प्राची कार्य प्राचित्र विकास मिरी पा उत्वासक हैरी कर्रा देव शीर व्यक्ति हरा से वार विकास (IIE)

(72) द्वानित्र क्या दिन या छन् यता प्र राण धेन्त्रभुयाण्य गंधरमला प्रशास हा अप का का नियं का निय वर्गामाले वास्त्र युक्तालामा रेचाता छाने प्रत्वितिषाप्रज्युरे प्रत (12A) न प्रस्तामा प्रमार्थिय विश्वासम मागोप्राच्यायनमञ्ज्यपुर्व - स्ट्रेल्यानातास्त्रकतिन्नाो पाच प्रत्य य मयता दलिंगाच्छान घ यं का सार यह शिर अम्मानी एउनेश्राकाम्यत हम्त्यार्वतोष्ट्रपा जनपा जारीय वृष्ठा जनापानि छत्नाताक्तरति छन्नामन्यका परेका का माना माना का का का मा याना जारत्य कतो जनमणा करा

तेमरी घरची धर्मण प्रत्मन हमणी उन् धेरिटनस्य द्वारा धारा श्री हात्या वि क्ली श्राप्ता प्रत्म क्राप्त काती जारी घरनाचाजा दललो र्यंत् गुणारो तेया क्रिका जम्बे जा क्रिका (13A) क अवसर कार जिस्ती करा अवस्ता की गच्छा प्याण भतो जिल्ला भारे उक्षणकारेय सम्माल आस्पता जनमञ्जूषा भन्त्रधा चम्यमेघा (138) जे अर प्रमचे जम छण प्रश् प्या ने ना क्रमकार्धी मधा हे व्यक्तिसम्बा धीयमंग्राधाभिधा छोल कमर्गिम समार्ग धार्या विकास कार्या कार्य (134) धायर्गान भाषणेश्रणामलय् ह्यास्त्र वृथास क्रान्ति समाविष्ट्र का प्राप्त्या भारत प्रापाध्य प्रथा ध्र मन स्त्रमनगराम्त्रात्र प्रधारातः ध्यानुमान् व्याप्ते मेचण छात्व प्रस्थात स्रातिमधार स्रेतीयुशास्त्र

26_ (14) श्रीहम्ला चणी का मधा यमणे कारक मत - ELAN न जलांका जिस्ता प्या कारता से धर्म ताकारी क्रियो ते से ए ममर्थलान लिस्मान्याम् अत्रयाण्यानार अका हमका हा अहा ना का का कार (14A) पात्रान्डप्रपापाद्मा भाग्या यम् यो अभा आना मे त्रप्रं न्म प्रमाण्डनाहरू का द्वाराधे ण प्रस्तिपति प्रकारणभीतिमा राम्यलंड के करी छो प्रश्ति ने श्राचे प्रत्मप्राम्यापतात्यी पत्रश्रानाकप्रभगमाल ध्रथ · (14c) चणा प्रचार का अन्य हिंदी हार हिंदी ममञापगानरी प्रस्थामक्तिल धार स्रधाय प्रदालां यो प्रांथ यागिक्तभारी जधतोषो प्रत्ने प्राप्त भार

(15) स्तीन स् योधन का युक्छ दिसमगुणे प्र स्म युक्त घंछतात् छेष स्उत्रचाप्शी गणे प्रत्तरोत्रायसम्भाग्रमाधेन क्री प्रवानगानृ भण्युराये प्रत्नण स्मित्रकारम्याचे प्रत्याचित्र (NA) म्मण्डित्र सेता कांस्य करिता कि पितान्यम का क्रितोमध्यान छम रिक्ताने भारतामन हारिक्र प्रमु रमयम् १मीत स्माया तारापारी (158) ताचे ग्राम्या ५ छ केण मुस्य ति प्रची त्रयेत्रीकी । एय प्राण निस्त्रमाधा गुन्ना धेतो बता गारो चे मस् १ छ उश्मान्य पार्व मात्राम्य कारी प्रत्मावा (150) मात्रकाकार्याहाराहाराहित भुक्तित्र अधिव विश्व का स्थानिक कि विश्व द्या हा हा शहना का पाने विष्य श्नणानिकात्यये घेषत्या बादाश्राप्त (150) सरमध्याजिताया हमा कि हमा त्रीत्यधि ग्राम्या प्रत्ये धाराप्रचा (ISE)

(16) र्यक्त्रे क्रित्यरितियमस्यत्व च्या वी धार्माहारू अभ्य धी राज्यमर्थ कुमा क्रिता छिर् चुम चरत्रा पाचाज तिनिश्वा प्रदाति एक्लामे स्त्या प्रमण्यु रायक्त धरचा छ त्राष्ट्रच रेशुउाध्य मला ए स्नानाण्डाचम पलर्तान्यतामगुप उत्मयपिद्य विकारता उत्तर्या ना स्थान (168) अव्यक्तिया ना का महत्वा श्रीकी योपन्य स्थान प्रमेष्ट्र पर्ने उंग जीन्छन च छतात्ये हैं मन्त्रणायग ना द्राति र्डामुख्य घ यचारान्त्र 16C धा मारामा का का मात्र का मात्र विद्वा चर्चनाश्चर्यं प्रात्मराण्य उन्युक्त उंध्ये प्रक्षान्य स्थित हमग्रा

र्युरा प्रमधायुक्त प्रत्मकन्याधान् प्रति ये द्रध्य द्रष्ट्रणाणस्य र द्रीते रहा प्रशतियोगम्याचा भारतिस्याना चो य छत् पर्याच्या गिन्याश्वाका छवति छलाना प्रधादन धनिता यश्वपाद्याचे छ हारमेश्रम् - ह्हाच्छा छ्राताभ द्यामच्यानि दाच्यानापाच्यान भूमपीत्राणाणानी छण्डारी मही घडी मान किर्मिंग त्भ प्रश्चे पा गण्डल कियोग मनिय प्रिकामिका क्राया प्राप्त मेथून च जाता विचरित्रम्य विचारी यम तोचा श्रायम यतार्यलं दाप्राम र्धि प्रतालमणप्रथास्त्रव्यापार्थाश्च छ्ण प्रतियोगम् अभागति ए शतिताशकारी सनामभागिरी लपुत्राण्डात्र प्र पत्र विष्युक्त ज्यासारात्य किश्येतीयस्य मणिसवेशात्र धमे मरत्त्र भू धरिएनर (JE)

ह्मेन चण्याधी हो चे चळारे र सूत्य च णतास्त्रात्तायुध्यद्भारत्ये चित्रयम् भाराणाहर जिल्ला मिक्री रहित्त था - OLENS १एकिमिनिया शिक्ताया हिल्लम मी गरा रे ला मान मान मान मान क्तास्फ्रना क्राफ्रमत्या ने मध्याता (180) भित्राम् वान्त्र महामानामस्य एपुण धीरा स्यापमा असम्मेखा रक्ष मुन्द्या अयम माम्मर्घर पिनारे विक्रित मना पंतरित्र निर्मा भारती राजित जी सायामा ह्या स्तारित द्राधिक अवीमिन्यत्र क्रित्र राका प्रगास्तरता धपुरम् जनाया राभाराभ द्राधापा ध्रामणा द्रामी यप्रचित्य यन्त्र प्रमाण जा प्रति। प्रमश्चम्य प्रमान्य महातो त्यांका श्नयद् अभेम उराम उत्तामार्थ मन्त्र । व्यक्षिणान र रेड्डिक मिला रा

पारिया जारो। यहा छिरानी पहन्ति भिन्दामा स्वपणिति पारियात्म घरे उत्वयन्त्रपुष्ठ ता छेपा गरने नग इस्ट जास स्त्येन देश स्थाप (190) रे पछित् एत्य का काता-उपज्यश्र जनम्म सन्त्रमामधील भित्रमान चर्म अपन्य अभिन्य हमकिए गा प्रकृति। युध्याच्या गिष्कू पृष्यस छाप्रस्मधियुक्त ध्रीमधामाण्या नर्भाभक्तपुर्ग्षणिक या मेचक श्रिष्ठा जर्षा या मा तापर्णमुमल्पमिष्र गिष्टिंन (क्रिकेटिकारिकारिकार ध्ये के सम्प्रित्य कि स्र स्ति म धारक स्माजन्म स्म रिम न हिंग सर माना काम काम करिया हो गाया (19E)



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे

राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)

दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८

Email ID: rajwademandaldhule@gmail.com